शास्त्री द्वितीय खण्ड, राष्ट्रभाषा हिन्दी, अ०द्वि०-पत्र

'निबंधमाला' गद्य भाग

शीर्षक :- 'महा-मानव- सागर-तीरे'

लेखक :- डॉ० रमाकान्त पाठक

प्रश्न :- बंगाल प्रतापी वीरों की धरती है। लेखक के इस कथन पर प्रकाश डालें।

उत्तर :- लेखक डॉ० रमाकान्त पाठक अपने प्रसिद्ध निबंध 'महा-मानव-सागर-तीरे' में बंगाल को प्रतापी वीरों की धरती कहा है। इस को सिद्ध करने के लिए उन्होंने बहुत सारे उदाहरणों का उल्लेख किया है। लेखक कहता है कि यहाँ अंग्रेजों से लोहा लेने के लिए दुधमुँहे खुदीराम जैसे बच्चे भी खेल-खेल में आजादी के लिए बम फेंका करते थे। आजादी के इन दिवानों ने तो भय को जीत लिया था। यही कारण है कि अंग्रेज बंगाल से काफी भयभीत रहने लगे थे। उन्हें लगा कि यहाँ का मजिस्ट्रेट भी छिपकर 'कृष्ण-चरित' और आनन्दमठ लिखता है। वह नौकरी से भी बड़ी चीज अपने स्वतंत्रता संग्राम को समझ रहा था। वह दफ्तर से निकलने के पहले ही मजिस्ट्रेसी के कोट को वहीं खूँटी में टाँग देता है।

बंगाल की भूमि रवीन्द्रनाथ टैगोर, सुभाषचन्द्र बोस, ईश्वरचन्द्र विद्यासागर, रामकृष्ण परमहंस और विवेकानन्द जैसे सपूतों की धरती है। यह वैसे लोगों की धरती है जहाँ के महामानव प्रताड़ना की अग्नि पीकर अंग्रेजों के अत्याचार का कालकूट पान कर साक्षात् शंकर बनगये हैं। इस गंगासागर क्षेत्र के महासागर के किनारे जिन महामानवों ने जन्म लिया है वे सम्पूर्ण भारत के लिए एक प्रेरणा के स्रोत बने हुए हैं।

लेखक का कहना है कि बंगाल की मिट्टी में ही एक ऐसी विशेषता है जो त्याग, तप, बलिदान एवं कुर्बानी में सम्पूर्ण देश के नेतृत्व की क्षमता रखती है। बंगाल एवं अन्य प्रान्तों के अन्तर को रेखांकित करते हुए पाठकजी पश्चिमी सभ्यता के स्वागत के ढंग की चर्चा करते हैं। कहते हैं कि इस कलिकाल में इस माया सुन्दरी के स्वागत में दो भाई खड़े हुए। एक तमिलनाडु दूसरा बंगाल।

शेष आगे-

परन्तु दोनों के स्वागत, स्वागत में अन्तर था जिसके कारण अंग्रेजी साम्राज्य में रेशमी फीते के प्रथम शहीद हुए बँगाल के महाराज नन्द कुमार और भारत के अन्तिम गवर्नर जनरल बने तमिलनाडु के नेता श्रीचक्रवर्ती राज-गोपालाचारी।

लेखक का विश्वास है कि हर संकटों में त्राण दिलाने वाली इस बंग भूमि में ही किसी दिन इस सागर के तीरपर महामानव नारायण का अवतार हो तो कोई आश्चर्य नहीं। ऋषियों की भारतमाता को सैकड़ों बार प्रणाम।

डॉ० देवचरण प्रसाद
एसो० प्रो० हिन्दी
रा०उ०संमहाविo खुखसेना, पूर्णियाँ
21।09।20

शास्त्री प्रथम खण्ड, राष्ट्रभाषा हिन्दी, अ० द्वि०-पत्र

'निर्मला' उपन्यास

लेखक :- मुंशी प्रेमचन्द

प्रश्न :- 'निर्मला' उपन्यास की समीक्षा इस प्रकार कीजिए कि उसकी समस्त विशेषताएँ स्पष्ट हो जाएँ।

उत्तर :- उपन्यास सम्राट मुंशी प्रेमचन्द स्वयं कहा है कि 'निर्मला' उपन्यास दहेज और अनमेल विवाह की करुणा भरी सामाजिक कहानी है। असमय और अनायास निर्मला के पिता का दुखान्त अन्त हो जाने के कारण दहेज के लोभी भालचन्द्र जी अपने पुत्र का विवाह सम्बन्ध तोड़ देते हैं। और, वह विवशता की स्थिति में तीन पुत्रों के पिता बूढ़े वकील तोताराम से ब्याही जाती है। निराश युवती निर्मला वृद्ध पति के प्रेम-स्वांगों से विरत हो जाती है। बूढ़े तोताराम की अन्धी काम-वासना अपने ज्येष्ठ पुत्र मंसाराम और निर्मला के बीच अनुचित सम्बन्ध का सन्देह करते हैं। यह सन्देह ही समस्त परिवार को दावानल बनकर भस्म कर देता है। मंसाराम इस आघात से मृत्यु को प्राप्त हो जाता है। मँझला पुत्र जियाराम आभूषण चुराकर भागना चाहता है। भेद खुलने पर वह आत्म हत्या कर लेता है। सबसे छोटा पुत्र सियाराम विरक्त होकर साधु हो जाता है। पिता तोताराम उसकी खोज में निकल पड़ते हैं। इधर निर्मला अकेली रह जाती है। भुवनमोहन रिक्ता जिन्होंने कभी दहेज के खातिर निर्मला को ठुकरा दिया था, वे उसे अपने प्रेम जाल में फँसाना चाहते हैं। परन्तु असफल होने पर आत्म-हत्या कर लेते हैं। निर्मला भी घुलती हुई अन्त में मृत्यु को प्राप्त होती है। शेष आगे के कक्षा में -

डॉ० देव चरण प्रसाद
एसो० प्रो० हिन्दी
रा०कृ०सं०महावि० सुखसेना, पूर्णियाँ

21/09/20

उपशास्त्री, राष्ट्रभाषा हिन्दी, अ० द्वि०-पत्र

दिगंत- भाग-2 - पद्य भाग
शीर्षक :- 'तुमुल कोलाहल कलह में'
कवि :- जयशंकर प्रसाद
व्याख्या :—

चिर-विषाद विलीन मन की
इस व्यथा के तिमिर वन की,
मैं उषा-सी ज्योति-रेखा,
कुसुम विकसित प्रात रे मन!

प्रस्तुत व्याख्येय पंक्तियाँ हमारी पाठ्य पुस्तक 'दिगंत-भाग-2 के 'तुमुल कोलाहल कलह में' शीर्षक से ली गई है। इसके रचयिता छायावाद के महान कवि श्री जयशंकर प्रसाद जी हैं। प्रस्तुत पंक्तियों में कवि शिरोमणि ने मन की व्यथा का वर्णन किया है।

प्रस्तुत पदों के माध्यम से कवि कहना चाहता है कि जब मनुष्य चिर-विषाद में विलीन हो जाता है तो घुटन महसूस करने लगता है, व्यथा रूपी अन्धकार में भटकने लगता है। उस समय में श्रद्धा अर्थात् आशा उसके लिए सूर्य की ज्योतिपुँज के समान पथ-प्रदर्शक तथा प्रस्फुटित पुष्प के समान जीवन को आनन्दित करती है।

उपर्युक्त पंक्तियों के माध्यम से कवि ने श्रद्धा के महत्व को स्पष्ट करने का प्रयास किया है। वर्तमान समय में मानव घोर कलह में डूबा हुआ है। परिणामस्वरूप आज का मानव नाना प्रकार के कष्टों को झेल रहा है। ऐसी विषम परिस्थिति में श्रद्धा ही सबों को सम्बल प्रदान करने वाली है।

डॉ० देव चरण प्रसाद
एसो० प्रो० हिन्दी
रा०क०सं०महावि०सुखसेना, पूर्णियाँ

21/09/20